मीठो–मीठो बोल थारो कांई लागे .....

मीठो–मीठो बोल थारो कांई लागे, कांई लागेजी थारो कांई लागे।
संसार कोई रो घर नहीं, कद निकले प्राण ख़बर नहीं।
मीठो–मीठो बोल थारो कांई लागै ....

चार दिना रो जीणो है संसार, थारी–मारी छोड़ करां सब प्यार।
हिलमिल रैवो, हँसखिल जीवों, हिलमिल रैवों, हँसखिल जीवों।
संसार कोई रो घर नहीं, कद निकले प्राण ख़बर नहीं।
मीठो–मीठो बोल थारो कांई लागे ....

अवगुण छोड़ो, गुणरी करलो बात, जीवन में हो आनंद री बरसात।
मिठास रो, अहसास लो, मिठास रो, अहसास लो।
संसार कोई रो घर नहीं, कद निकले प्राण ख़बर नहीं।
मीठो–मीठो बोल थारो कांई लागे ....

जिण घर में सब हिलमिल ने रैवे, उण घर प्रभुजी मोत्यां बरसावे।
सब प्रेम रो, प्यालो पिवो, सब प्रेम रो, प्यालो पिवो।
संसार कोई रो घर नहीं, कद निकले प्राण ख़बर नहीं।
मीठो–मीठो बोल थारो कांई लागे ....

मात–पिता ने जाणो थे भगवान्, उणरी सेवा है प्रभु रो सम्मान।
सेवा करो, आशीष लो, सेवा करो, आशीष लो।
संसार कोई रो घर नहीं, कद निकले प्राण ख़बर नहीं।
मीठो–मीठो बोल थारो कांई लागे ....

बड़े बड़ाई ना करे, बड़े न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख हमारो मोल।।